Peer Reviewed Journal

ISSN 2319-8648

Impact Factor (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

International Peer Reviewed Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Special Issue 20 Vol. II

on

भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श

Indian Society & Ideology of Disability

October 2019

Associate Editor
Dr. Shivaji Wadchkar

Guest Editor
Principal Dr. V.D. Satpute

Assistant Editor
Dr. V.B. Kulkarni
Dr. A.K. Jadhav
Dr. S.A. Tengse

www.publishjournal.co.in

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2348-7143

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

October 2019 Special Issue- 20 Vol. II

भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श

Indian Society & Ideology of Disability

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Associate Editor
Dr. S.A. Wadchkar

Guest Editor
Dr. Vasant Satpute

Assistant Editor
Dr. V.B. Kulkarni
Dr. A.K. Jadhav
Dr. S.A. Tengse

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. II	Peer Reviewed	ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019	SJIF	Impact Factor : 7.139

Index

1.	भारतीय समाज और विकलांग विमर्श डॉ. ठाकूरदास.एम.बी.	10
2.	आपका बंटी उपन्यास में बंटी की मानसिक विकलांगता प्रा.उषमवार जी.बी.	14
3.	विकलांगता और आत्मविश्वास डॉ. दत्ता शिवराम साकोळे	17
4.	भारतीय समाज में विकलांगों की समस्याएँ डॉ. रेविता बलभीम कावळे	21
5.	अलका सरावगी का उपन्यास 'कोई बात नहीं' में विकलांगता एवं आत्मविश्वास डॉ.चन्नाळे विनोद प्रभाकर,	26
6.	विकलांग व्यक्तिंचे मराठी कादंबरीतून आलेले चित्रण प्रा. देशमुख बिभीषण	29
7.	विकलांगो की सामाजिक स्वीकार्यता परसमाजशास्त्रीय दृष्टिकोण धर्मेन्द्र सिंह यादव	34
8.	विकलांग विमर्श : स्वरूप एवं अवधारणा प्रा. डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश	39
9.	अपंगाचे विश्वः वेदन आणि आत्मविश्वास प्रा.डॉ.सा.द.सोनसळे	42
10.	मानसिक विकलांगता : अभिशाप या समस्या प्रा. डॉ. एकलारे चंद्रकांत नरसप्पा	45
11.	हिन्दी चलचित्रों में दृष्टि–विकलांग विमर्श प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'	50
12.	विकलंगता, महाभारत के पात्र - विचार विमर्श प्रा. डॉ. शोभा जगन्नाथराव यशवंते	56
13.	कथा साहित्य में विकलांग विमर्श प्रा.डॉ.जाधव के.के.	59
14.	हिन्दी साहित्य में विकलांग विमर्श डॉ. सुभाष प्रल्हादराव इंगळे	62
15.	हिंदी कथा-साहित्य में विकलांग चरित्र डॉ.शेखर घुंगरवार	65
16.	श्रवण कौशल का दृष्टिबाधित बालकों के लिए महत्व : डॉ.काळे बी.एम.	69
17.	हिंदी साहित्य : सिनेमा और विकलांग का अंतसंबंध	72

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

हिन्दी चलचित्रों में दृष्टि–विकलांग विमर्श

प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'
निमन्त्रित सदस्य, हिन्दी अध्ययन मण्डल, डॉ. बाबासाहब अम्बेड़कर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद तथा हिन्दी विभाग, व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय, उस्मानाबाद

"कागा कागा सब तन खाइयो, चुनचुन खाइयो माँस।
दो नैना मत खाइयो पिया मिलन की आस।।"
"कहत नटत रिझत खिझत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं नैनन हूं सब बात।।"

सन्तश्रेष्ठ कबीरदास और रीतिसिद्ध कवि बिहारी ने अपने दोहों के माध्यम से 'नयन' इस ज्ञानेन्द्रीय की महत्ता प्रकट की है। मानव के जीवन में 'देखना' यह क्रिया सबसे महत्वपूर्ण क्रिया है। मानव अपने जीवन में अधिक ज्ञानार्जन 'आँख' के माध्यम से ही करता है। इसके उपरांत अन्य ज्ञानेन्द्रीयों का क्रम आता है। आँख की तन्मात्रा 'रूप' है और इसका सम्बन्ध 'अग्नि' अथवा 'तेज' इस महाभूत से है। मानवीय मनोरंजन के साधनों में नाटक, चलचित्र, दूरदर्शन आदि का सम्यक आनन्द भी नेत्रवान लोग ही दे सकते हैं। नेत्रविहीन लोगों का जीवन अँधेरे में चला जाता है। नेत्र की ज्योति से महरूम लोगों को समाज की दया और करूणा पर अवलम्बित रहना पड़ता है। ऐसे लोगों को केन्द्र में रखकर हिन्दी चलचित्रों में अनेक चरित्रों को निर्माण किया गया है। ये अन्धे चरित्र हिन्दी चलचित्रों में अमर हो चुके हैं। इस शोधालेख के आरम्भ में हम आँखों की संरचना समझ लेने का प्रयास करेंगे।

मानव के शरीर में सबसे महत्वपूर्ण अंग हैं 'आँखें' इन्हें ही चक्षु, नयन, नेत्र आदि भी कहा जाता है। मनुष्य की आँख सबसे प्रधान ज्ञानेन्द्रीय है, इसी के माध्यम से वह दुनिया को देखता है, निरीक्षण करता है और हर कदम पर सँभलकर चलता भी है। आँख या नेत्र जीवधारियों का वह अंग है जो प्रकाश के प्रति संवेदनशील है। यह प्रकाश को संसूचित करके उसे तन्त्रिका कोशिकाओं के द्वारा विद्युत–रासायनिक संवेदों में बदल देता है। उच्चस्तरीय जीवों की आँखें एक जटिल प्रकाशीय तन्त्र की तरह होती हैं जो आसपास के वातावरण से प्रकाश की एकत्र करता है, मध्यपट के द्वारा आँख में प्रवेश करनेवाले प्रकाश की तीव्रता का नियन्त्रण करता है, इस प्रकाश को लेन्सों की सहायता से सही स्थान पर केन्द्रित करता है, जिससे प्रतिबिम्ब बनता है। इस प्रतिबिम्ब को विद्युत संकेतों में बदलता है, इन संकेतों को तन्त्रिका कोशिकाओं के माध्यम से मस्तिष्क के पास भेज देता है।

आँखों की संरचना में पलकें (आय लीड), दृष्टि चेताकोशिका (ऑप्टिक नर्व), नेत्र गोलक (आय बॉल), नेत्रकोशिका (आय सेल), पक्ष्माभी कोशिका (सिलियरी मसल्स), प्रकाश सुग्राही कोशिका (लाईट सेन्सेटिव सेल), श्वेतपटल (स्क्लेरा), रक्त पटल (ब्लड), दृष्टिपटल (रेटिना), नेत्रश्लेष्मला (कंजंक्टीवल), अश्रु उपकरण (टीयर ड्राप टूल), स्वच्छमण्डल (कॉर्निया), परितारिका (आइरीस), पुतली (प्युपील), स्फटीकीय लेन्स (क्रिस्टलाइन लेन्स), नेत्रोद (अक्वा हयुमर), नेत्र काचाभ सान्द्रता द्रव (कंजंक्टीव फ्युईड),

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. II Octomber 2019	Peer Reviewed SJIF	ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

रोमक पिण्ड (रोमा बॉडी) आदि का समावेश होता है। यदि किन्हीं कारणों से इन सूक्ष्मागों पर कोई आघात या संक्रमण हो जाता है, तो दृष्टि में अन्तर से लेकर अन्धत्व तक अनेक विकलांगताएँ निर्माण हो सकती हैं। ये दृष्टिदोष अस्थायी, अर्धस्थायी और स्थायी भी हो सकते हैं तथा उपचारोपरान्त ठीक भी हो सकते हैं।

हिन्दी चलचित्र विधा भारत ही नहीं अपितु विश्वभर में अपना विशिष्ट स्थान बना चुकी है। साहित्य की अनेक विधाओं में नाटक की तरह ही इसे भी एक दृश्यकाव्य की विधा ही मानना चाहिए। अपनी प्रभावात्मकता के कारण यह विधा मानवमात्र की पसंदीदा विधा बन चुकी है। मानव चाहे अनपढ़ हो या सम्भ्रान्त हर कोई इसे अपना रहा है। भरतनाट्यशास्त्र में निहित नाटक के लक्षणों से युक्त यह चलचित्र विधा 'मृदुललितपादाढ्यम्' है, 'गूढशब्दार्थहीनम्' है, 'जनपदसुखबोध्यम्' है, 'युक्तिमन्नृत्ययोग्यम्' है, 'बहुकृतरसमार्गम्' है, 'सन्धिसन्धानयुक्तम्' भी है। 'दुःखार्त, श्रमार्त, शोकार्त, तपस्वी आदि जनों के विश्राम के लिए, उनके मनोविनोद के साथ–साथ शिक्षा के लिए चलचित्र विधा बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। दादासाहब फाळके द्वारा प्रवर्तित इस विधा की लोकप्रियता आज इतनी बढ़ चुकी है कि इसके प्रभाव से कोई भी सहृदय व्यक्ति अछूता नहीं रह सकता। चलचित्र को रूपहले परदे पर तो देखा ही जा सकता है, साथ ही दूरदर्शन पर और आंतर्जाल की सहायता से चलभाषयन्त्र पर भी आसानी से देखा जा सकता है।

हिन्दी चलचित्र मानवी जीवन के लगभग सारे आयामों को स्पर्श करते हैं। दाम्पत्य प्रेम से लेकर आध्यात्मिक प्रेम तक, युद्ध से लेकर बुद्ध तक, छल–प्रपंच से लेकर आत्मविसर्ग तक, श्रृंगार से लेकर वीभत्स तक कोई भी कथ्य इस विधा का जीव्य–उपजीव्य विषय बन सकता है। मानवी जीवन में निरामय, स्वस्थ और शान्त रहना हर किसे के लिए सम्भव नहीं है। शारीरिक और मानसिक व्याधियों से ग्रस्त मानव सर्वदा जनसाधारण की करूणा का पात्र रहा है। मनुष्य कभी कभी कुछ विशेष कारणों जैसे जन्मतः, अप्राकृतिक आचरण से, ग़लती से अथवा दण्ड स्वरूप अंगभंग अथवा मानसिक कुण्ठाओं का शिकार हो जाता है। इन्हीं सभी विकृतियों को 'विकलांगता' कहा जा सकता है। विकलांगता को अंग्रेजी में डिसॲबिलिटी कहा जाता है, जो फिजिकल और सायकॉलॉजिकल दोनों प्रकार की हो सकती है। हिन्दी चलचित्रों में इन सभी विकलांगताओं का बड़ी आत्मीयता के साथ चित्रण किया गया है।

हिन्दी चलचित्रों में अनेक चरित्र शारीरिक एवं मानसिक अत्याचारों से पीड़ित दिखाये जाते हैं। सर्वसाधारण मनुष्य अपने विकास के लिए शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक अथवा आध्यात्मिक संघर्ष का भुक्तभोगी बन जाता है। उसे विविध प्रकार की व्याधियों से त्रस्त होना पड़ता है। कर्मेन्द्रियों जैसे हाथ–पैर, सिर, आदि अंगों के प्रताड़न रूपी दुःख को सहना पड़ता है। कभी–कभी ज्ञानेन्द्रियों जैसे आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा आदि को खोना पड़ता है। यहाँ तक कि दृष्टि, श्रवणशक्ति, घ्राणशक्ति, संभाषणशक्ति आदि से वंचित भी होना पड़ता है। एक प्रकार से अंगभंग, अवयव भंग जैसी यंत्रणाओं से गुजरना पड़ता है। साधारण भाषा में इन्हें लूला, लँगड़ा, अँधा, गूँगा, बहरा होना पड़ता है। कभी कभी स्मरणशक्ति, मननशक्ति, मानसिक शान्ति से भी वंचित होना पड़ता है। किन्तु जो मनुष्य हिन्दी चलचित्र का प्रधान चरित्र (नायक या नासिका) अथवा मध्यवर्ती चरित्र होता है, वह इन सभी शारीरिक और मानसिक अक्षमताओं पर विजय प्राप्त कर अपने लक्ष्य को आत्मविश्वास और

सद्प्रयासों के बल पर अर्जित ही कर लेता है। प्रधान चरित्रों के साथ–साथ गौण चरित्रों या सामान्य पात्रों में भी ये विशेषताएँ पायी जा सकती हैं।

हिन्दी चलचित्रों में इन्हीं अँधों को केन्द्र में रखकर अनेक चरित्रों और सहचरित्रों का निर्माण किया गया है। मानव के शरीर का प्रत्येक अंग अपनी महत्ता और विशेषता रखता है। अब हम क्रमशः कतिपय महत्वपूर्ण चलचित्र–चरित्रों का अध्ययन करेंगे।

हिन्दी चलचित्रों में अधिकतर विकलांगता दृष्टि विकलांग चरित्रों की दिखाई देती है। इन चलचित्रों में अधिकतर अन्धे पात्र सहायक भूमिका में नज़र आते हैं। ताराचन्द बडजात्या के राजश्री प्रॉडक्शन के बैनर तले निर्मित एवं सत्येन बोस के निर्देशन में बने चलचित्र 'दोस्ती' (1964) इस विमर्श का सफलतम चलचित्र है। लोकप्रियता और पुरस्कारों दोनो दृष्टियों से यह चलचित्र आज भी रसिकों की पहली पसन्द बना हुआ है। इस चलचित्र की कथा बानी भट्ट ने लिखी है। पटकथा और संवाद गोविन्द मुनीस जी ने लिखे हैं। मज़रूह सुलतानपुरी के गीतों को लक्ष्मीकान्त प्यारेलाल के संगीत ने अमर कर दिया है। मार्शल ब्रिगेन्जा का छायांकन विशेष है। संकलन जी. जी. मयेकर ने किया है। मात्र 143 मिनट के इस चलचित्र में मानवी जीवन के बहुत महत्वपूर्ण विषय पर महान् सन्देश देने का प्रयास किया है। इस महान् चलचित्र पर छह फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। जैसे – सर्वश्रेष्ठ चलचित्र पुरस्कार – ताराचन्द बडजात्या, सर्वश्रेष्ठ कथा पुरस्कार – बानी भट्ट, सर्वश्रेष्ठ संवाद लेखन पुरस्कार – गोविन्द मुनीस, सर्वश्रेष्ठ संगीतकार पुरस्कार – लक्ष्मीकान्त–प्यारेलाल, सर्वश्रेष्ठ गायक पुरस्कार – 'चाहूँगा मैं तुझे साँझ सबेरे' मुहम्मद रफ़ी, सर्वश्रेष्ठ गीतकार – 'चाहूँगा मैं तुझे साँझ सबेरे' मजरूह सुलतानपुरी साथ ही सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के रूप में सत्येन बोस का नामांकन भी हुआ था। अब हम संक्षेप में इस चलचित्र के कथानक का अध्ययन करेंगे।

इस चलचित्र में दो विकलांग युवाओं की दोस्ती और त्याग का वर्णन किया गया है। रामनाथ गुप्ता उर्फ रामू (सुशीलकुमार) के पिता एक कारखाने में हुई दुर्घटना में मारे जाते हैं। कारखापने का प्रशासन किसी प्रकार की क्षतिपूर्ति करने से इन्कार कर देता है। रामू की माँ (लीला चिटणीस) इस अपेक्षाभंग को सह नहीं पाती और उसकी मृत्यु ही जाती है। एक सड़क दुर्घटना में रामू का एक पैर टूट जाता है। अनाथ, गरीब और बेघर रामू जब मुम्बई में दर–दर की ठोकरें खाता रहता है। ऐसे में उसका परिचय एक अन्धे युवक मोहन (सुधीर कुमार) से हो जाता है। मोहन की व्यथा भी रामू जैसी ही है। मोहन देहात का रहनेवाला है और बचपन में ही उसकी दृष्टि चली जाती है। मोहन अपनी बड़ी बहन मीना (उमा राज) को खोजने के लिए मुम्बई चला आता है, जो एक नर्स है और मोहन की आँखों के इलाज के लिए शहर आई है। रामू और मोहन दोनों मुम्बई की सड़कों पर गाना गाकर, बाजा बजाकर अपना–अपना पेट भरने लगते हैं। थक जाने पर सड़क के किनारे ही सो जाते हैं।

एक दिन रामू और मोहन की मुलाकात एक अमीर लड़की मंजुला उर्फ मंजू (बेबी फ़रीदा) से हो जाती है। जो उनके गाने पर प्रसन्न होकर उन्हें कुछ पैसे देने लगती है, किन्तु वे दोनों अपनी छोटी बहन जैसी लड़की से पैसे लेने से इन्कार कर देते हैं। मंजू की बिगड़ती हुई सेहत की देखभाल करने के लिए एक नर्स की आवश्यकता पड़ती है तो उपचार करनेवाले डॉक्टर मीना को ही मंजू के घर लाते हैं।

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

मोहन अन्धा होने के कारण पढ़ तो नहीं सकता पर उसका सपना है कि रामू पढ़–लिखकर काबिल बने। वे दोनों पढ़ाई के लिए पैसे माँगने के लिए मंजू घर के सामने आ जाते हैं। पर मंजू का बढ़ा भाई अशोक (संजय खान) उन दोनों को अपमानित कर मात्र पाँच रुपये देकर और आगे से वहाँ न आने की हिदायत देकर भगा देता है। मोहन को इस प्रकार का अपमान ठीक नहीं लगता और वह रामू की पढ़ाई के लिए और अधिक मेहनत से गाना गाने का निश्चय कर लेता है।

सड़क के किनारे सोनेवाले रामू और मोहन कुछ ही दिनों में एक झोपड़ीपट्टी में रहने लगते हैं। इस झोपड़ी की पड़ोसन मौसी (लीला मिश्रा) रामू और मोहन को अपने बच्चों जैसा ही स्नेह करती है। जब रामू पाठशाला में प्रवेश लेने जाता है तो हेडमास्टर (अभि भट्टाचार्य) उसकी जिम्मेदारी लेनेवाला कोई सम्भ्रान्त सज्जन चाहिए, इस प्रकार की अपेक्षा करते हैं अन्यथा पाठशाला के नियम के अनुसार वह प्रवेश नहीं ले सकेगा। तभी पाठशाला के एक अध्यापक शर्मा (नाना पळशीकर) रामू की जिम्मेवारी लेने को तैयार हो जाते हैं। अब रामू शर्मा जी की छत्रछाया पाकर भावविभोर हो जाता है। शर्मा जी रामू को झोपड़पट्टी छोड़कर उनके घर रहने की आज्ञा देते हैं। परन्तू रामू मोहन को छोड़कर नहीं रहना चाहता।

एक दिन मोहन सुनता है कि अशोक मीना को पुकार रहा है। मोहन पहचान जाता है कि यह नर्स कोई और नहीं उसीकी बहन है। मोहन मीना से बात करना चाहता है पर मोहन को भिखारी के रूप में देखकर मीना उसे पहचानने से इन्कार कर देती है। इस बात से मोहन खफ़ा हो जाता है और मीना से नफ़रत करने लगता है। बाद में मीना अशोक को सबकुछ सच–सच बता देती है। इस बीच मीना और अशोक की लाख कोशिशों के बाद भी मंजुला की मृत्यु हो जाती है।

रामू अपनी झोपड़ी में ही अध्ययन तो करता रहता पर उसके अध्ययन में बाधा डालनेवाले गुण्डों से झगड़ा करता है। इस झगड़े के कारण पुलिस रामू को हिरासत में ले लेती है। ऐसे में अध्यापक शर्मा जी रामू की जमानत करके उसे छुड़ा तो लेते हैं पर झोपड़ी छोड़कर उनके घर रहने का आदेश देते हैं। रामू कठोर मन से मोहन से बिछुड़ जाता है। उसका मन पढ़ाई में नहीं लगता। तभी अचानक अध्यापक शर्मा जी की मृत्यु हो जाती है। अब शर्मा जी का साया उठ जाने से रामू परीक्षा शुल्क के अभाव में परीक्षा भी नहीं सकता। यह बात मोहन को पता लगती है तो बीमार हाते हुए भी रास्तों पर गा–गाकर परीक्षा शुल्क जुटा लेता है। इतना ही नहीं चुपके से परीक्षा शुल्क पाठशाला के कार्यालय में जमा भी कर देता है। इस बात का रामू को पता नहीं होता। पर इस कारण मोहन बहुत बहुत बीमार हो जाता है। मौसी मोहन को अस्पताल में भर्ती करा देती है। जहाँ मीना अपनी पहचान छूपाकर मोहन की देखभाल करने लगती है। इधर रामू परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करता है। मोहन को हेडमास्टर से मोहन के उपकारों की सच्चाई का पता चलता है। तो रामू मोहन से मिलने अस्पताल में चला आता है। अन्त में मोहन अपने दोस्त रामू और अपनी बहन मीना को क्षमा कर देता है। इस चलचित्र का निम्न गीत आज भी सहृदय रसिकों को रूला देता है।

" चाहूँगा मैं तुझे साँझ सबेरे फिर कभी अब नाम को तेरे
आवाज़ मैं न दूँगा, आवाज़ मैं न दूँगा।।
देख मुझे सब है पता सुनता है तू मन की सदा।

मितवाँ मेरे यार तुझको बार बार आवाज़ मैं न दूँगा।।
दर्द भी तू चैन भी तू दरस भी तू नैन भी तू।
मितवाँ मेरे यार तुझको बार बार आवाज़ मैं न दूँगा।।

'दोस्ती' से पहले और बाद में अनेक हिन्दी चलचित्रों में दृष्टि–विकलांग चरित्र को केन्द्र रखकर अनेक चलचित्रों को निर्माण किया गया है। इनमें सबसे पहला चलचित्र 'मशाल' (1950) है। जिसमें तंरगिणी नामक अभिनेत्री ने 'सुमित्रा देवी' इस अन्ध महिला की भूमिका निभाई थी। इस चलचित्र में सरला दास (रूमादेवी गुहा) और समर नाथ (अशोक कुमार) की प्रेम कहानी चित्रित की गई है। इस चलचित्र का निर्देशन नितीन बोस ने किया था।

इसके बाद सोहराब मोदी के निर्देशन में बने चलचित्र जेलर (1958) में दयाशील जेलर दिलीप (सोहराब मोदी) अपनी पत्नी कँवल (कामीनी कौशल) और बेटी बाली (डेज़ी ईरानी) के साथ जीवन बीता रहा है। उसके जीवन में एक अन्धी लड़की 'छाया' (गीताबाली) आती है, जिसके भाई ने बदमाश रामसिंह चौधरी (नाना पळशीकर) को अपनी बहन की रक्षा करते समय मार डाला है। दिलीप के प्रयास से डॉ. रमेश (अभि भट्टाचार्य) छाया से विवाह कर लेता है।

वी. शान्ताराम जी ने प्रभात कुमार के निर्देशन में एक महत्वपूर्ण चलचित्र 'तूफ़ान और दिया' (1956) में बनाई थी। जिसमें भाई और बहन के स्नेह को चित्रित किया गया है। अनाथ सदानन्द (सतीश व्यास) आपनी अन्धी बहन नन्दिनी (बेबी नन्दा) के साथ रहता है। उसका एक ही सपना है कि उसके बहन का विवाह हो जाये। अपने इस प्रयास में उसे अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। अन्ततः सदानन्द के पिता जी का एक छात्र सतीश शर्मा (राजेन्द्र कुमार) नन्दिनी से विवाह कर लेता है।

निर्देशक प्रसाद ने 'छोटी बहन' (1959) चलचित्र का निर्माण किया था। मीना (बेबी नन्दा) और उसके भाइयों राजेन्द्र (बलराज साहनी), शेखर (रहमान) की कहानी चित्रित की गई है। राजेन्द्र मीना का विवाह डॉ. रमेश (सुदेश कुमार) के साथ निश्चित होता है। किन्तु सगाई के बाद ही मीना की दृष्टि चली जाती है। राजेन्द्र को नौकरी से निकाला जाता है और शेखर घुड़दौड़ के खेल और शराब में बह जाता है।

हरगोविन्द के निर्देशन में पतंग (1960) चलचित्र बना था। जिसमें नायिका शान्ति (माला सिन्हा) एक अन्धी लड़की होती है। जिसका उपचार करते–करते डॉ. राजन (राजेन्द्र कुमार) उससे प्रेम करने लगता है। अन्ततः दोनों का विवाह हो जाता है।

ए. भीमसिंह के निर्देशन में बना चलचित्र 'पूजा के फूल' (1964) में अन्ध समस्या को चित्रित किया गया है। जिसमें नायक बलराज (धर्मेन्द्र) की सगाई तो शान्ति राय (माला सिन्हा) से हो जाती है। शान्ति के पिता का खानदान बहुत अमीर होता है। किन्तु इस घर का वातावरण बलराज को पसंद नहीं आता। वह कुछ दिनों के लिए कहीं निकल जाता है। लौटने पर वह शान्ति से विवाह करने से इन्कार कर एक अन्धी लड़की गौरी (निम्मी) से विवाह करता है, जो उसके मित्र बालम सिंह (प्राण) की बहन होती है।

राज खोसला के निर्देशन में निर्मित चलचित्र 'चिराग' (1969) अत्यन्त महत्वपूर्ण चलचित्र है। अजय सिंह (सुनिल दत्त) स्वयं एक अमीर खानदान का वारिस होता है जो एक ग़रीब घर की बेटी आशा छिब्बर (आशा पारेख) को ग़लती से अमीर मानकर उससे प्रेम करने लग जाता है। आशा के भाई डॉ. ओम्प्रकाश छिब्बर (ओम्प्रकाश) और भाभी शान्ति (सुलोचना लाटकर) से अजय मिलता है। अजय की माँ गायत्रीदेवी (ललिता पवार) इस विवाह को मंजूरी देती है। विवाह के बाद आशा अपनी गरीबी की सच्चाई बताना चाहती है, पर बता नहीं पाती। कुछ समय बाद उसकी दृष्टि भी चली जाती है। ऐसे में आशा पूरी तरह से अपने पति अजय पर ही निर्भर हो जाती है। गायत्रीदेवी यह सह नहीं पाती और वह निराश होकर आशा को घर से निकल जाने के लिए कहती है। अब गायत्रीदेवी अजय का दूसरा विवाह करवाना चाहती है। पर इससे घर के सभी लोगों के जीवन में परिवर्तन आ जाता है।

इसी विषय को लेकर अन्य चलचित्रों में 'अनुराग' (1972) की नायिका शिवानी (मौसमी चटर्जी) अन्धी लड़की होती है, जिसके साथ राजेश (विनोद मेहरा) विवाह कर लेता है। 'झील के उस पार' (1973) चलचित्र की नायिका अन्धी नीलू (मुमताज) एक देहात में रहती है। एक चित्रकार धरम (धर्मेन्द्र) नीलू की आँखों का उपचार करना चाहता है। मनमोहन देसाई निर्देशित चलचित्र 'अमर अकबर अन्थोनी' (1977) अमर, अकबर और अन्थोनी, तीनों की माँ भारती (निरूपा रॉय) अन्धी हो जाती है और चमत्कार के रूप में उसकी दृष्टि वापिस आ जाती है। गुलज़ार द्वारा निर्देशित चलचित्र 'किनारा' (1977) में आरती (हेमामालिनी) अन्धी है। इमान धरम (1977) में श्यामली (अपर्णा सेन) अन्ध है। सुहाग (1979) में किशन (शशि कपूर) अन्धा है। सूनयना (1979) में सूनयना (तल्लूरी रामेश्वरी) अन्धी है। स्पर्श (1980) में अनिरूद्ध (नसिरूद्दीन शाह) अन्ध अध्यापक है। बरसात की एक रात (1981) में रजनी (राखी अन्धी) है। कत्ल (1986) में राकेश (संजीव कुमार) अन्धा है। भ्रष्टाचार (1989) में गोपी (शिल्पा शिरोडकर) अन्धी है। संगीत (1992) में संगीता (माधुरी दीक्षित) अन्धी है। जय किशन (1994) में किशन (अक्षय कुमार) अन्धा है। दुश्मन (1998) सूरज (संजय दत्त) अंधा सैनिक है। आँखें (2002) में विश्वास प्रजापति (अक्षय कुमार), अर्जुन वर्मा (अर्जुन रामपाल) और इलियास (परेश रावल) अन्धे हैं। ब्लॅक (2005) में मिचेल मॅकनी (रानी मुखर्जी) अन्धी है। वादा (2005) में राहुल वर्मा (अर्जुन रामपाल) अन्धा है। नैना (2005) नैना शाह (उर्मिला माथोडकर) अन्धी है। रेन (2005) उपन्यासकार सन्ध्या भटनागर (मेघना नायडू) अन्धी है। शॅडो (2009) राजू (सच्चा अन्धा अभिनेता नस्सार खान) अन्धा है। लफंगे परिन्दे (2010) पिंकी पालकर (दीपिका पादूकोण) अन्धी है। फ़ना (2010) में झूनी (काजोल) अन्धी है। शिप ऑफ तेसीयस (2013) में आलिया कमाल (ऐदा अल काशेफ) अन्धी है। मार्गारिटा विथ अ स्ट्रॉ (2014) में खानम (सैनी गुप्ता) अन्धी है। दो लफ्जों की कहानी (2016) में जेनी (काजल अग्रवाल) अन्धी है। धनक (2016) में छोटू (कृष छाब्रिया) अन्धा है। काबिल (2017) में रोहन (ऋत्विक रोशन) और सुप्रिया (यामी गौतम) दोनों अन्धे हैं। अन्धाधुन (2018) में आकाश (आयुष्मान खुराना) अन्धा है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि साहित्य की किसी विधा के मुकाबले में चलचित्रों दृष्टि–विकलांगों की वेदना को अधिक चित्रित करने का सफल प्रयास किया है।

।। जय हिन्दी, जय नागरी।।

Current Global Reviewer

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 7.139

Peer Reviewed Journal

ISSN 2319-8648

Edited By
Arun B. Godam
Latur, Dist. Latur-413512
(Maharashtra, India)
Mob. 8149668999

Publisher
Shaurya Publication

www.publishjournal.co.in